मानव कल्याण
सम्बन्धी इस्लामी उपदेश

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, 20 (यू०पी०)इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	मानव कल्याण सम्बन्धी इस्लामी उपदेश
संकलनकर्ता-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी-	पहला
पुस्तक संख्या-	1000
वर्ष-	2018
मूल्य-	20 रू०
कम्पोज़िंग-	इरफ़ान अह़मद
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया
Book Name	**Manav Kalyan Sambhandhi Updesh**
Writer	**Mufti Mohd Sarwar Farooqui Nadwi**
Publisher:	**Maktaba Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India**
Website:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail :	**jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522–2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522–2741539)
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुह़ल्ला, जबलपुर, (मध्य प्रदेश) (9424708020)
5. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, (कानपुर) (9935044343)
6. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, (लखनऊ) (9198621671)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
पवित्र क़ुर्आन और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)	5
मानवता का विभाजन	5
भेदभाव	5
मानव एकता	6
बुराई के जवाब में भलाई	6
न्याय	7
अन्तिम महाईशदूत के सुकथनों का वर्णन	7
जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरे के लिए	7
ज़मीन वालों पर रह़म	8
वज़नी आ़माल	8
पड़ोसी से व्यवहार	8
जानवरों पर दया	8
पेड़ पौधे लगाने वाले के लिए सद्क़ः	9
जानवरों को कष्ट न दो	9
किसी जानदार को आग़ का अ़ज़ाब नहीं	10
जानवरों को बाँधने की मनाही	11
नर्म मिज़ाज	11
देहाती के सांथ हमदर्दी	11
तिजारत में धोखा न दे	12
नौकरों के साथ व्यवहार	12
ज़बान का सह़ी प्रयोग	12
अच्छे व्यवहार का वज़न	13
ह़रामख़ोरी की मनाही	13
पत्नियों के साथ व्यवहार	13
अच्छे व्यवहार का दर्जा	14
झूठ की मनाही	14
बनावटी और घमण्डी	14
नर्मी अपनाने का फ़ायदा	15
आसानी पैदा करना	15

विषय	पृष्ठ सं०
नर्मी से मह़रूम	15
क्षमा का जज़्बा	16
गुस्सा पर क़ाबू	16
रिश्तेदारों के साथ भलाई	16
न्याय का हुक्म	17
सवाल से बचो	17
ग़ैर मुस्लिम माँ की सेवा	17
ग़ैर मुस्लिम की हत्या पर जहन्नम	18
घमण्डी जन्नत में न जाएगा	18
बदला न लेने वाला	18
इन्साफ़ सब के साथ	19
मज़लूम की आह	19
नौकर को सत्तर बार क्षमा	20
पड़ोसी का ह़क़	20
रिश्तेदारों के साथ व्यवहार	20
बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार पर जन्नत	21
मोमिन की पहचान	21

पवित्र क़ुर्आन और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

यह निर्विवादित और सर्वमान्य सत्य है कि तमाम मानव जाति का पैदा करने वाला मालिक एक है और उसी ने इस मानव को जन्म दिया। अतः अपनी सृष्टि में हर मानव से प्रेम करता है। जिसने मानव कल्याण के लिए पवित्र क़ुर्आन के रूप में एक विधान भेजा है। जो स्वयं मानव जाति के सृष्टि स्वामी या पालनकर्ता की वाणी है। यह ग्रन्थ हर प्रकार के मानवीय हस्तक्षेप, संशोधन व परिवर्तन भ्रष्टीकरण से रहित और पूर्ण रूप से सुरक्षित उसी सृष्टा के आदेशों, निर्देशों का संग्रह है। जो सत्य सिद्धान्त के अनुसार मानवता की शिक्षा देता है, जो मानव की शिक्षा का पहला स्रोत है अर्थात ईश्वरीय ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन तथा दूसरा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आचरण।

सद्उपदेश जिन्हें ह़दीस कहते हैं, यह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं का संग्रह है जिसमें मानव प्रेम, दयालुता, क्षमाशीलता, आत्मसंयम, निर्धनों व दरिद्रजनों की सहायता, जनसेवा, इन्सानी भाईचारा, प्रेम व्यवहार आदि जैसे उच्च मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी गई है।

मानवता का विभाजन-

इस प्रकार जो अपने पैदा करने वाले मालिक का अनुसरण न करे और अपनी इच्छापूर्ति के नाम पर मानवता का विभाजन करके उन्हें अनेक श्रेणियों तथा वर्गों में विभक्त कर देता है, पहले उसे देश और जाति के नाम पर बाँटता है, फिर एक छोटा वर्ग समाज के शेष बड़े भाग को अपना दास और सेवक बना लेता है। मानवता की यह दुर्दशा किसी एक देश में नहीं होती बल्कि संसार के अधिकतर देशों और जातियों की परम्परा रही है। इसके प्रमाण के लिए इतिहास साक्षी है।

भेदभाव-

पवित्र क़ुर्आन समस्त छोट-मोटे स्वामी के साम्राज्य को समाप्त कर मनुष्य को केवल एक निराकार परमेश्वर की उपासना का पाठ पढ़ाता है और मनुष्यों के बीच

हर प्रकार के भेदभाव को ढ़ाकर समस्त मानव को एक समान मानने की उद्घोषणा करता है और रंग, नस्ल, गोत्र, जाति और देश या ऊँच-नीच के विभाजन से रोकता है और सत्कर्म, पुण्य और सदाचार के आधार पर अच्छे कर्म करने वाला चाहे किसी रंग, वंश या किसी देश व जाति का हो, श्रेष्ठ और उत्तम मानता है और बुरा कर्म करने वाला चाहे किसी रंग, वंश, देश और जाति का हो निक्रिष्ट तथा तुच्छ मानता है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में है:-

"ऐ मनुष्यों! हमने तुम सब को एक मनुष्य और एक स्त्री द्वारा उत्पन्न किया है और तुम्हारे गोत्र और परिवार बन दिये हैं, ताकि इन नामों से तुम एक दूसरे का परिचय प्राप्त कर सको, निःसन्देह तुम में श्रेष्ठ वही है जो सबसे अधिक सदाचारी और परमेश्वर से डरने वाला हो"। **(सूर निसाः आयत नं० 3)**

मानव एकता-

यह क़ुर्आन रूपी अन्तिम ईश्वरीय संविधान की प्रस्तावना है, जिसके द्वारा मानव एकता की स्पष्ट घोषणा की गई है। जिसकी व्याख्या करते हुए महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ह़ज्जतुल्विदाअ़ के अवसर पर एक ऐतिहासिक भाषण दिया था, जिसमें कहा था, ऐ लोगों! तुम्हारा पालनकर्ता एक है और तुम्हारा पूर्वज भी एक है और तुम सब आदम की सन्तान हो और आदम मिट्टी से बने थे और अल्लाह ने इस्लाम लाने से पूर्व के अज्ञानपूर्ण घमण्ड, जाति और गर्व को मिटा दिया। संयमी, धर्माचारी या दुराचारी एवं भाग्यहीन सब लोग आदम की सन्तान हैं और आदम मिट्टी से बने थे।

बुराई के जवाब में भलाई-

पवित्र क़ुर्आन के सूरः हामीम सज्दः आयत नं० 34 में बुराई को अच्छे ढंग से दूर करने का आदेश दिया गया है और बुराई के जवाब में भलाई और न्याय का मामला किये जाने का आदेश देते हुए सूरः नहल आयत नं० (90) में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। जिससे इन्सान के अन्दर यह बात पैदा होती है कि जो बात करेगा न्याय से परिपूर्ण करेगा, जिसका आदेश सूरः माइदा आयत नं० (2) व (76) में भी दिया गया है।

इस्लाम में हर प्रकार के दंगा, फ़साद को रोकते हुए किसी को बुरा कहने से ही मना कर दिया गया है जिसका उल्लेख सूरः अनूआ़म आयत नं० 108 में दिया गया है कि जब किसी को बुरा नहीं कहेगा तो वातावरण दूषित होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

न्याय-

इसी प्रकार न्याय में दोस्त हो या दुश्मन सब के साथ न्याय करने का बर्ताव सूरः माइदा आयत नं० (8) में है और पवित्र क़ुर्आन सूरः निसा आयत नं० (35) में सच्ची गवाही और सच बोलने का आदेश दिया गया है कि चाहे कितनी ही बड़ी हानि हो परन्तु सत्य का दामन न छोड़े। सूरः हुजुरात आयत नं० (6) से (12) तक क़ौमों से अच्छे सम्बन्ध को बिगाड़ने वाले रोगों का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है कि कोई किसी की हँसी न उड़ाये, किसी को ऐ़ब न लगाये, बुरा नाम न रखे और किसी के सम्बन्ध में बुरे विचार न रखे और बिना जाँच-पड़ताल के किसी की ओर से कोई बुराई करे तो उस पर भरोसा करके मान न ले।

यह सब ऐसे नियम हैं जिससे पूरे विश्व में शान्ति का वातावरण बनाये रखने में सहायक हैं और इस पर अमल करके पूरे विश्व में शान्ति स्थापित करते हुए मानव कल्याण की राहों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में मानव कल्याण सम्बन्धी इस्लामी उपदेश ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) द्वारा दिये गये हैं जो निम्न प्रकार से हैं:-

अन्तिम महाईशदूत के सुकथनों का वर्णन

जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरे के लिए-

١ـ عن أنس بن مالك ـ رضى الله عنه ـ عن النبى ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : لا يؤمن أحدكم حتى يحب لأخيه ما يحب لنفسه ـ

(متفق عليه ـ البخارى ـ ١٣ ـ و مسلم ـ ٤٥)

(1) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, उस वक़्त तक तुम ईमान वाले नहीं हो सकते यहाँ तक कि वही पसन्द करो अपने भाई के लिए भी जो पसन्द करते हो अपने लिए। (बुख़ारी व मुस्लिम)

٢ـ و عن أبى هريرة ـ رضى الله عنه ـ قال : قال رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ من لا يرحم لا يرحم ـ (متفق عليه ـ البخارى ـ ٥٩٩٧ ـ مسلم ٢٣١٨)

(2) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जो इन्सानों पर दया नहीं करता अल्लाह उस पर दया नहीं करता। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ज़मीन वालों पर रह़म-

٣ـ وعن عبد الله بن عمرو بن العاص ـ رضى الله عنهما ـ قال : سمعت رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ يقول : الراحمون يرحمهم الرحمٰن ، ارحموا من فى الأرض يرحمكم من فى السماء ـ (رواه ابو داؤد ـ الأدب ـ ٤٦٤١)

(3) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया दया करने वालों पर, बड़ा दयावान, अल्लाह दया करेगा। ज़मीन पर रहने वाली मख़्लूक़ (समस्त प्राणियों) पर तुम दया करो तो आसमान वाला तुम पर दया करेगा। (अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)

वज़नी आ़माल-

(٤) عَنْ اَبِىْ الدَّرْدَاءِ؛ رَضِىَ اللّٰهُ عَنهُ عَنِ النَّبِىِ ﷺ قَالَ : مَامِنْ شئ ءٍ اَثْقَلُ فِىْ الْمِيْزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ (رواه ابو داؤد ، باب فى حسن الخلق، رقم، ٧٤٩٩)

(4) ह़ज़रत अबीदर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, (क़ियामत के दिन) मोमिन के तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई चीज़ नहीं होगी। (अबूदाऊद)

पड़ोसी से व्यवहार-

٥ـ و عنه أن رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يؤذِ جاره ـ (متفق عليه : البخارى ـ ٥١٨٥ و ٦٠١٨ ـ و مسلم : ٤٧)

(5) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जो व्यक्ति अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान (आस्था) रखता हो, उसे चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को कष्ट न दे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

जानवरों पर दया-

٦ـ و عنه ـ رضى الله عنه ـ عن النبى ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : بينما رجل يمشى بطريق اشتد عليه العطش ، فوجد بئراً فنزل فيها فشرب ، ثم خرج فاذا كلبٌ يلهث

يـأكل الثرى من العطش ، فقال الرجل : لقد بلغ هذاالكلب من العطش مثل الذى كان بـلغ بى ، فنزل البئر ، فملأ خفه ثم أمسكه بفيه ، فسقى الكلب فشكر الله له ، فغفر له ، قـالـو ا : يا رسول الله ! و إن لـنـا فـى البهائم أجراً ؟ فقال : فى كل ذات كبد رطبةٍ أجرٌ ـ (متفق عليه ،واللفظ للبخارى)-[البخارى ٦٠٠٩و : ١٧٣) مسلم (٢٢٤٤)]

(6) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया "एक व्यक्ति रास्ता चल रहा था कि उसे बड़ी तेज़ प्यास लगी इतने में उसे एक कुंआ मिला और उसने इसमें उतर कर पानी पिया फिर जब बाहर निकला तो देखा एक कुत्ता हांफ रहा है और प्यास की वजह से तरी को चाट रहा है, यह देख कर उस व्यक्ति ने कहा यह कुत्ता भी उतना ही ज़्यादा प्यासा मालूम होता है जितना मैं था, अतः वह फिर कुंए में उतरा और अपने जूते में पानी भरने के बाद मुंह से पकड़ कर ऊपर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया, अल्लाह तआ़ला ने उसके इस कार्य को पसंद किया और उसकी मग़्फ़िरत (क्षमा) कर दी।

आप (सल्ल०) के साथियों ने कहा या रसूलल्लाह! क्या हमें जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में भी सवाब (पुण्य) मिलता है? ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया हर जानदार (के साथ अच्छा व्यवहार करने) पर सवाब मिलता है। (बुख़ारी शरीफ़)

पेड़ पौधे लगाने वाले के लिए सद्क़ः-

٧ـ و عـن أنـس بـن مـالك ـ رضى الله عنه ـ عن النبى ـ صلى الله عليه وسلم ـ قال : ما من مسـلم يغرس غرساً أو يزرع زرعاً ، فيأكل منه طيرٌ ، أو إنسانٌ أو بهيمةٌ ، إلا كان له به صدقةٌ ـ (متفق عليه ، واللفظ للبخارى)-(٢٣٢٠و : ٦٠١٢) مسلم (١٥٥٣)

(7) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया यदि कोई मुसलमान वृक्ष (पेड़) लगाता है और उस पेड़ से कोई इन्सान या जानवर खाता है तो पेड़ लगाने वाले के लिए वह सदकः हो जाता है।

जानवरों को कष्ट न दो-

٨ـ و عـن عبـد الـلـه بـن جـعفر ـ رضى الله عنهما ـ قال : دخل رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ حـائـطاً لرجل من الأنصار ، فاذا فيه جملٌ ، فلما رأى رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ حَنَّ و ذَرَفَت عيناه ، فأتاه النبى صلى الله عليه وسلم ـ فمسح سراته و ذفراه ، فسكن ، فقال: من

ربُّ هـذاالجمل ؟ لمن هذا الجمل ؟ فجاء فتىً من الأنصار ، فقال : هذا لى يا رسول الله ! قال : أفلا تتقى الله فى هذه البهيمة التى ملكك الله اياها ؟؟فانه يشكو الى أنك تجيعه و تدئبه ـ (رواه أحمد و أبو داؤد-٢٥٤٩)

(8) अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक अन्सारी सह़ाबी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये, वहाँ एक ऊँट था जब उस ऊंट ने आप को देखा, तो ऐसा डकारा और ऐसी दर्द भरी आवाज़ उसने निकाली (जैसी बच्चे के जुदा हो जाने पर ऊंटनी की आवाज़ निकलती है) और उसकी आंखों से आंसू भी जारी हो गये। रसूलुल्लाह (सल्ल०) उसके पास गये और आप ने उस पर हाथ फेरा तो वह शान्त हो गया। फिर आपने पूछा यह ऊंट किसका है? इस का मालिका कौन है? एक अन्सारी नौजवान आये और उन्होंने कहा, ह़ज़रत यह ऊँट मेरा है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस बेचारे बेज़बान जानवर के बारे में तुम उस अल्लाह से डरते नहीं जिसने तुमको इसका मालिक बनाया है। इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसको भूखा रखते हो और ज़्यादा काम ले कर तुम इसको बहुत कष्ट पहुँचाते हो। (अबू दाऊद शरीफ़)

किसी जानदार को आग़ का अ़ज़ाब नहीं-

٩ـ و عـن ابـن مسـعـود ـ رضى الله عنه ـ قال : كنا مع رسول الله ـ صلى الله عليه وسلم ـ فى سـفـر، فـانـطـلـق لـحـاجتـه ، فرأينا حمرة معها فرخان، فأ خذنا فرخيها ، فجائت الحمرة فـجـعـلـت تـفـرش ، فـجاء النبى ـ صلى الله عليه وسلم ـ فقال : من فجع هذه بولدها ؟ رُدوا ولـدهـا عـليهـا ورأى قرية نمل قد حرقتها ، فقال : من حرق هذه ؟ فقلنا : نحن قال : إنه لا ينبغى أن يعذب بالنار إلارب النار ـ (رواه أبو داؤد-الجهاد (٢٦٧٥)

(9) ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०)कहते हैं कि हमने अपने पिता से सुना कि एक सफ़र में मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ था आप (सल्ल०) क़ज़ा-ए-ह़ाजत (लेट्रीन) के लिए गये थे कि उसी समय हमारी नज़र एक छोटी सी सुर्ख़ (लाल) चिड़िया पर पड़ी, जिसके साथ छोटे-छोटे उसके दो बच्चे भी थे हमने उन बच्चों को पकड़ लिया, वह चिड़िया आई और हमारे सरों पर मंडलाने लगी, इतने में रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ ले आये,

आपने फरमाया, किसने इसके बच्चे पकड़ कर इसे सताया है? इस के बच्चे इस को वापस कर दो और आप (सल्ल०) ने चींटियों की एक बस्ती देखी हम ने वहां आग लगा दी थी आपने फ़रमाया, किसने इन को आग से जलाया है? हमने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह हमने ही यह आग लगाई है आपने फ़रमाया, आग के पैदा करने वाले खुदा के सिवा किसी के लिए यह सज़ा देने का अधिकार नहीं है कि वह किसी जानदार को आग का अज़ाब दे। (अबूदाऊद शरीफ़)

जानवरों को बाँधने की मनाही-

١٠۔ و عن عبد الله بن عمر ۔رضی الله عنهما۔ قال : قال رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ عُذِّبت إمرأةٌ فی هِرّة لم تطعمها ولم تسقها ولم تترکها تأکل من خشاش الأرض ۔

(رواه مسلم : ٢٤٤٣)

(10) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक बेदर्द और बेरहम औरत इसलिए जहन्नम में गिराई गई कि उसने एक बिल्ली को बांध कर भूखा मार डाला, न तो उसे खुद कुछ खाने को दिया और न उसे छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से अपनी गिज़ा (खाना) हासिल कर लेती। (मुस्लिम)

नर्म मिज़ाज-

(١١) عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بن مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اَلَا اُخْبِرُکُمْ بِمَنْ یَحرُمُ عَلَی النّارِ، وَبِمَنْ تَحْرُمُ عَلَیْهِ النّارُ ؟ عَلٰی کُلِّ قَرِیْبٍ هَیّن سَهْلٍ

(رواه الترمذی وقال : هذا حدیث حسن غریب، باب فضل کل قریب هین سهل، رقم : ٢٤٨٨)

(11) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि वह शख़्स कौन है जो आग पर ह़राम होगा और जिस पर आग ह़राम होगी? (सुनो मैं बताता हूँ) दोज़ख़ की आग ह़राम है हर ऐसे शख़्स पर जो लोगों से क़रीब होने वाला, निहायत नर्म मिज़ाज और नर्म तबीअ़त हो। (तिर्मिज़ी)

देहाती के साथ हमदर्दी-

١٢۔ و عنه ۔رضی الله عنه۔ قال : بال أعرابی فی المسجد فقام الناس إلیه لیقعوا فیه ، فقال النبی ۔صلی الله علیه وسلم۔ دعوه و أریقوا علی بوله سجلا من

ماءٍ ، أو ذنوباً من ماءٍ،فإنما بعثتم میسرین ، ولم تبعثوا معسّرین ۔

(رواه البخاری :٦١٢٨ و : ٢٢٠)

(12) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया सह़ाबा (रज़ि०) उनकी ओर दौड़े परन्तु रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, इसके पेशाब को मत रोको फिर आपने (सल्ल०) पानी का डोल मंगाया और पेशाब की जगह पर पानी बहा दिया। (बुख़ारी)

तिजारत में धोखा न दे-

١٣۔ وعن ابن عمر ۔رضی الله عنهما۔ قال : ذکر رجلٌ لرسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ أنه یخدعُ فی البیوع؟ فقال ۔صلی الله علیه وسلم۔ : " من بایعت ، فقل لا خلابة " ۔ (متفق علیه) البخاری (٢١١٧)، مسلم (١٥٣٣)

(13) हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, कोई भी सामान बेचते या ख़रीदते समय धोखा देकर दाम न बढ़ाओ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नौकरों के साथ व्यवहार-

١٤۔ و عن أنس ۔رضی الله عنه۔ قال : ما مسِست دیباجاً ولا حریراً ألین من کف رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ ولا شممت رائحة قط أطیب مِن رائحة رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ و لقد خدمت رسول الله۔ صلی الله علیه وسلم۔ عشر سنین ، فما قال لی قط : أُفّ، ولا قال لی لشئٍ فعلته : لم فعلته ؟ ولا لشئٍ لم أفعله : ألا فعلت کذا ؟ (متفق علیه) البخاری (٣٥٦١)، مسلم (٢٣٣٠)

(14) हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने दीबा और रेशम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुबारक हथेली से ज़्यादा नर्म नहीं छुआ और कभी कोई खुशबू रसूलुल्लाह(सल्ल०) की खुशबू से अधिक अच्छी नहीं सूंघी और मैंने आप की दस वर्ष सेवा की आपने कभी उफ़ भी नहीं कहा और न किसी काम के करने या न करने पर आपने कभी फ़रमाया कि ऐसा क्यों किया या क्यों न किया। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ज़बान का सही प्रयोग-

١٥۔ و عن عبد الله بن عمرو بن العاص ۔رضی الله عنهما۔ قال : لم یکن رسول

اللـه -صلـى الـله عليه وسلم- فاحشاً ولا متفحشاً ، وكان يقول : "إن مِن خياركم أحسنكم أخلاقاً" - (متفق عليه [البخارى -٣٥٥٩، مسلم ٢٣٢١])

(15) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जान बूझ कर या अन्जाने में कभी भी अशिष्ट बात न निकालते थे और फ़रमाते थे कि तुम में सबसे बेहतर वह है जिस का व्यवहार अच्छा हो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अच्छे व्यवहार का वज़न-

١٦- و عن أبى الدرداء -رضى الله عنه- قال : "ما من شئٍ أثقل فى ميزان المؤمن يوم القيامة من حسن الخُلُق ، وإن الله يبغض الفاحش البذِئَ"

(رواه الترمذى) [٢٠٠٣] وقال : حديث حسن صحيح

(16) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) बन्दे की नेकियों के तौलने के समय अच्छे व्यवहार से अधिक कोई वस्तु भारी न होगी और अल्लाह तआ़ला बकवास बकने वाले बदज़बान आदमी से घृणा करता है। (तिर्मिज़ी)

ह़रामख़ोरी की मनाही-

١٧- و عن أبى هريرة -رضى الله عنه- قال : سُئلَ رسول الله -صلى الله عليه وسلم- عن أكثر ما يُدخل الناس الجنة ؟ قال : "تقوى الله و حسن الخُلُق" و سُئل عن أكثر ما يُدخل الناس النار ؟ فقال : "الفم والفرج"

(رواه الترمذى [٢٠٠٥] وقال : حديث حسن صحيح)

(17) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह (सल्ल०) से पूछा गया कि किसके कारण लोग जन्नत में जाएँगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह के भय और एहतियात और सद् व्यवहार से और पूछा गया, दोज़ख़ में अधिकतर किस वजह से लोग जाएँगे फ़रमाया, हराम ख़ोरी और बद्कारी की वजह से। (तिर्मिज़ी)

पत्नियों के साथ व्यवहार-

١٨- و عنه قال : قال رسول الله -صلى الله عليه وسلم- "أكمل المُؤمنين

إيماناًأحسنهم خُلقاً ، و خياركم خياركم لنسائهم" -

(رواه الترمذى [٢٠٠٥] و قال : حديث حسن صحيح

(18) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया संम्पूर्ण ईमान वाला वह है जिसके व्यवहार अच्छे हों और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों से अच्छे व्यवहार से पेश आये। (तिर्मिज़ी)

अच्छे व्यवहार का दर्जा-

١٩- و عن عائشة -رضى الله عنهما- قالت : سمعت رسول الله -صلى الله عليه وسلم- يقول : "إن المؤمن ليدرك بحسن خُلُقه درجة الصائم القائم" -

(رواه أبو داؤد : ٤٧٩٨)

(19) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) सद्व्यवहार के कारण लगातार रोज़े रखने वाले और आबिद (संयमी) का दर्जा प्राप्त कर लेता है। (अबूदाऊद)

झूठ की मनाही-

٢٠- و عن أبى أمامة الباهِلى -رضى الله عنه- قال : قال رسول الله -صلى الله عليه وسلم- "أنا زعيمٌ ببيت فى ربض الجنة لمن ترك المِراءَ ، و إن كان مُحِقّاً ، ببيت فى وسط الجنة لمن ترك الكذِبَ وإن كان مازحاً، و ببيت فى أعلى الجنة لِمن حَسُنَ خُلُقُه" - حديث صحيح (رواه أبو داؤد : ٤٨٠٠) بإسناد صحيح-

(20) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के सामने एक घर की ज़मानत लेता हूं जिसने ह़क़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के अन्दर मैं एक घर की ज़मानत लेता हूँ जिसने झूठ छोड़ दिया चाहे वह मज़ाक़ ही में बोलता था और उस व्यक्ति के लिए जन्नत की बुलन्दी में एक घर की ज़मानत लेता हूं जिसके आचरण अच्छे हों। (अबूदाऊद)

बनावटी और घमण्डी-

٢١- و عن جابر -رضى الله عنه- أن رسول الله -صلى الله عليه وسلم- قال : "إن من أحبكم إلى و أقربكم منى مجلساً يوم القيامة ، أحاسنكم أخلاقاً، و إن أبغضكم إلى ،

و أبعدكم منى يوم القيامة ، الثرثارون والمتشدقون والمتفيهقون " قالوا : يا رسول الله ! قد علمنا الثرثارون والمتشدقون فما المتفيهقون ؟ قال : " المتكبرون "

(رواه الترمذى (٢٠١٩) وقال حديث حسن)

(21) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन मुझसे सबसे अधिक पसंदीदा, सबसे अधिक क़रीब वह लोग होंगे जो अच्छे आचरण वाले हैं और मुझे सबसे अधिक नापसंद और सबसे अधिक मुझसे दूर वह होंगे जो ज्यादा बातूनी, चर्ब ज़बान और बनावटी व घमण्डी लोग होंगे। (तिर्मिज़ी)

नर्मी अपनाने का फ़ायदा-

٢٢. و عن عائشة .رضى الله عنها. أن النبى .صلى الله عليه وسلم. قال : " إن الرّفق لا يكون فى شئ إلا زانه ، ولا يُنزع من شئ إلا شانه " . (رواه مسلم) (٢٥٩٤)

(22) ह़ज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि जिस चीज़ में नर्मी होती है वह उसको सुन्दर बनाती है और जिस चीज़ से निकल जाती है उसको बुरा कर देती है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

आसानी पैदा करना-

٢٣. و عن أنس .رضى الله عنه. عن النبى .صلى الله عليه وسلم. قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول : " يسروا ولا تعسروا ، بشروا ولا تنفروا " . (متفق عليه) (البخارى ١/١٥٠، مسلم (١٧٣٤)

(23) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, आसानी पैदा करो सख़्ती न करो, बशारत दो, नफ़रत न दिलाओ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नर्मी से महरूम-

٢٤. وعن جرير بن عبد الله .رضى الله عنه. قال : سمعت رسول الله .صلى الله عليه وسلم. يقول : " من يُحرم الرفق يُحرم الخير كله "

(رواه مسلم) (٢٥٩٢)

(24) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जो नर्मी से महरूम (वंचित) रहा वह हर भलाई से महरूम रहा। (मुस्लिम)

क्षमा का जज़्बा-

٢٥ . وعنه .رضى الله عنه .قال : كنت أمشى مع رسول الله .صلى الله عليه وسلم. و عليه بُردٌ نجرانىٌّ غليظ الحاشية ، فأدركه أعرابىٌّ ، فجبذه بردائه جبذةً شديدةً ، فنظرت إلى صفحة عاتق النبى .صلى الله عليه وسلم. وقد أثرت بها حاشية الرداء من شدة جبذته ،ثم قال : يا محمد ! مُر لى من مال الله الذى عندك ، فالتفت إليه ، فضحك ، ثم أمر له بعطاءٍ.

(متفق عليه)(البخارى.١/٢٣٤ و ٤٢٠، ٤٢٠ و ٤٢١، مسلم (١٠٥٧)

(25) ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल) के साथ एक बार जा रहा था कि आप (सल्ल०) मोटे किनारे की नजरानी चादर ओढ़े हुए थे, एक देहाती आप (सल्ल०) से मिला और चादर पकड़कर आप (सल्ल०) को बड़े ज़ोर से खींचा, (मैंने देखा कि आप (सल्ल०) के कांधे पर चादर के खींचने से निशान पड़ गये थे) और कहा, "ऐ मुह़म्मद! मुझे उस माल से दीजिए जो आप (सल्ल०) को अल्लाह ने दिया है, आप ने उस की ओर देखा और मुस्कुराए फिर उसको देने का आदेश दिया। (बुख़ारी व मुस्लिम)

गुस्सा पर क़ाबू-

٢٦. و عن أبى هريرة .رضى الله عنه. أن رسول الله .صلى الله عليه وسلم. قال: " ليس الشديد بالصُّرعة ، إنما الشديد الذى يملك نفسه عند الغضب"

(متفق عليه)(البخارى ١٢/٤٤٩، ٢٥٠، مسلم (١٧٩٢)

(26) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, पहलवान वह नहीं जो किसी को पिछाड़ दे पहलवान वह है जो गुस्सा के समय अपने आप को क़ाबू में रखे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

रिश्तेदारों के साथ भलाई-

٢٧. و عنه .رضى الله عنه. أن رجلًا قال : يا رسول الله ! إن لى قرابةً أصلهم ويقطعونى ، و أحسن اليهم و يسيئون الى ، و أحلم عنهم و يجهلون على ! فقال " لئن كنت كما قلت فكأنما تسفهم المل ، ولا يزال معك من الله تعالىٰ ظهيرٌ عليهم ما دُمت على ذلك " . (رواه مسلم) (٢٥٥٨)

(27) ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुजूर (सल्ल०) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और उसने कहा! मेरे रिश्तेदार हैं, मैं उनसे रिश्ता जोड़ता हूँ, वह काटते हैं मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं अच्छे आचरण पेश करता हूँ, वह मुझ पर सख़्ती करते हैं, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जो कुछ तुम कहते हो यदि यह सही है तो तुम उनके मुँह में ख़ाक डालते हो, जब तक तुम्हारा यह व्यवहार रहेगा अल्लाह की मद्द तुम्हारे साथ रहेगी। (मुस्लिम)

न्याय का हुक्म-

٢٨۔ و عن عبد الله بن عمرو بن العاص ۔رضی الله عنهما۔ قال : قال رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم ۔ : " إن المقسطین عند الله علی منابر من نُورٍ : الذین یعدِلون فی حکمهم و أهلیهم و ما وَلُوا " (رواه مسلم) [١٨٢٧]

(28) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, न्याय करने वाले नूर के मेम्बर पर होंगे वह जो अपनी सत्ता में अपने घरों में, और जो काम उन के हवाले हुआ हो उसमें न्याय करें। (मुस्लिम)

सवाल से बचो-

٢٩۔ و عن عیاض بن حمارٍ ۔رضی الله عنه۔ قال : سمعت رسول الله۔ صلی الله علیه وسلم۔ یقول : " أهل الجنة ثلاثةٌ : ذُو سُلطانٍ مُقسطٌ مُوفقٌ، و رجل رحیم رقیق القلب لکل ذی قربی و مُسلمٍ ، و عفیفٌ متعفِّفٌ ذُو عِیالٍ ۔

(رواه مسلم) [١٨٥٥]

(29) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, तीन आदमी जन्नत के ह़क़्दार होंगेः- 1- न्यायी बादशाह जो न्याय करता हो 2- ऐसा आदमी जो हर क़रीबी रिश्तेदार मुसलमान के लिए रह़मदिल और नर्म हो। 3- वह आदमी जो सवाल (भिक्षा) से बचे यद्यपि कई सन्तानों वाला हो। (मुस्लिम)

ग़ैर मुस्लिम माँ की सेवा-

٣٠ ۔ و عن أسماء بنت أبی بکر ن الصدیق ۔رضی الله عنهما۔ قالت : قدِمت علی أُمی و هی مُشرکةٌ فی عهد رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ قلتُ :

قدمت علی أُمی و هی راغبة ، افأصِلُ أُمی ؟ قال : " نعم صلی أُمَّكِ " ۔

(متفق علیه) [البخاری ٥/ ١٧٠، ١٧٢ و ١٠/ ٣٤٦ ، ٣٤٧ ، مسلم (١٠٠٣)]

(30) ह़ज़रत असमा (रज़ि०) कहती हैं, हुदैबिया की सन्धि के ज़माने में मेरी विधर्मी माँ मेरे पास आयीं, मैंने ईश्वरीय दूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूछा, कि महाईशदूत मेरी मां मेरे पास आयी हैं और वह इस्लाम से असन्तुष्ट हैं, क्या मैं उनकी सेवा करूं? उन्होंने कहा कि हां, उनकी सेवा करो। (बुखारी शरीफ़)

ग़ैर मुस्लिम की हत्या पर जहन्नम-

٣١۔ و عن القاسم بن مُخیمِرة ، عن رجل من أصحاب النبی ۔صلی الله علیه وسلم۔ أن رسول الله ۔صلی الله علیه وسلم۔ قال : " مَن قتل رجلاً من أهل الذمة ،لم یجد ریح الجنة ، و إن ریحها لیوجد من مسیرة سبعین عاماً " ۔ (رواه النسائی) [٩]

(31) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिसने किसी ज़िम्मी (वह ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी शासन में रहता है) की हत्या की अल्लाह ने स्वर्ग उसके लिए ह़राम कर दिया। (नसई)

घमण्डी जन्नत में न जाएगा-

(٣٢) عَن عبدالله رضی الله عنه عن النبی ﷺ قال : لا یدخل الجَنة من کان فی قلبه مثقال ذرة من کبر۔

(رواه مسلم ، باب تحریم الکبر وبیانه، رقم : ٢٦٧)

(32) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, वह शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा जिस के दिल में ज़रा बराबर भी घमण्ड हो।

बदला न लेने वाला-

(٣٣) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال : قال رسول الله ﷺ : قال موسی ، بن عمران عَلیه السلام : یا رب! من اعزُّ عبادك؟ قال: من اذا قدر غفر۔

(رواه بیهقی فی شعب الایمان٦/١٣٩)

(33) हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, हज़रत मूसा बिन इमरान (रज़ि०) ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया: ऐ मेरे रब! आप के बन्दों में आप के नज़्दीक ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन है? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया: वह बन्दा जो बदला ले सकता हो और फिर माफ़ कर दे। (बैहक़ी)

इन्साफ़ सब के साथ-

٣٤۔ و عن عائشة ۔رضى الله عنها۔ أن قريشاً أهمهم شأن المرأة المخزومية التى سرقت فقالوا : من يكلم فيها رسول الله۔ صلى الله عليه وسلم۔ ؟ فقالوا : من يجترئ عليه إلا أسامة بن زيد حِبُّ رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ ؟ فكلمه أسامة ، فقال رسول الله ۔ صلى الله عليه وسلم : " أتشفع فى حدٍ من حدود الله تعالىٰ ؟ ! " ثم قام فاختطب ثم قال : " انما أهلك من قبلكم أنهم كانوا إذا سرق فيهم الشريف تركوه ، واذا فيهم سرق الضعيف أقاموا عليه الحد ! و أيم الله ، لو أن فاطمة بنت محمد سرقت لقطعتُ يدها "

(متفق عليه) [البخارى ١٢/٧٧، ٨٥، مسلم [١٦٨٨]

(34) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, ...अल्लाह की क़सम, यदि मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उसके भी हाथ काट दूँगा। (बुख़ारी)

मज़लूम की आह-

٣٥۔ وعن جابر ۔رضى الله عنه۔ أن رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال : "إتقو االظلم ، فان الظلم ظُلُماتٌ يوم القيمة ، واتقوا الشُح فإن الشُح أهلك من كان قبلكم حملهم على أن سفكوا دمائهم واستحلوا محارمهم ".

(رواه مسلم) [٢٥٧٨]

(35) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मज़लूम (पीड़ित) की आह से बचो क्योंकि वह अल्लाह से अपना अधिकार मांगता है और अल्लाह और पीड़ित के बीच में कोई पर्दा नहीं होता। (मिश्कात)

नौकर को सत्तर बार क्षमा-

٣٦۔ و عن عبد الله بن عمر ۔ رضى الله عنهما ۔ قال : جاء رجلٌ إلى النبى ۔ صلى الله عليه وسلم ۔ فقال : يا رسول الله ! كم أعفو عن الخادم ؟ قال : كل يومٍ سبعين مرةً ۔ (رواه ابو داؤد والترمذى) [أبو داؤد (٥١٦٤]

(36) एक बार एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला 'हे ईश्वर के दूत! हमें अपने नौकर की ग़लतियाँ कहाँ तक माफ़ करनी चाहिए? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) चुप रहे। उसने यही सवाल दोबारा किया, आप (सल्ल०) फिर भी चुप रहे। तीसरी बार सवाल करने पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा एक दिन में 70 बार। (अबूदाऊद)

पड़ोसी का हक़-

٣٧۔ عن معاوية بن حيدة قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ حَقُّ الجار إن مرض عُدته وإن مات شيّعته و إن استقرضك اقرضته وإن اعور سترته وإن أصابه خير هنّأ ته و إن أصابته مصيبة عزيته ولا ترفع بنائك فوق بنائه فتسد عليه الريح ولا تُؤذيه بريح قدرك إلا أن تعزف ۔

(رواه الطبرانى فى الكبير)

(37) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, पड़ोसी का अधिकार तुम पर यह है कि अगर वह बीमार हो जाये तो उसकी ख़बर लो, मर जाये तो उसकी शवयात्रा (जनाज़े) में जाओ, क़र्ज़ मांगे तो उसको क़र्ज़ दो, कोई बुरा काम करे तो उस पर ध्यान न दो। उसे कोई खुशी मिले तो बधाई दो, दुख पहुंचे तो सांत्वना दो, अपना मकान इस प्रकार से ऊंचा न करो कि उसके घर की हवा रुक जाये, तुम्हारे घर में पकने वाली चीज़ों की खुशबू से उसे पीड़ा न पहुँचे, अगर खाने की खुशबू घर पहुँचती हो तो जो कुछ तुमने पकाया है उसके घर भी भेजो। (तबरानी)

रिश्तेदारों के साथ व्यवहार-

٣٨۔ و عن أنس ۔رضى الله عنه ۔ أن رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال: "من أحب أن يُبسط له فى رزقه ، و يُنسأَ له فى أثره ، فليصل رَحِمه "

(متفق عليه) [البخارى (٥٩٨٦)، مسلم (٢٥٥٧)]

(38) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया,'' जो व्यक्ति चाहता है कि उसके अन्न एवं भोजन में वृद्धि हो एवं उसका नाम दुनिया में काफ़ी समय तक रहे तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। (बुख़ारी)

बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार पर जन्नत-

٣٩۔ و عن أبى سعيد ن الخدرى ۔رضى الله عنه۔ أن رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ قال : قال رسول الله ۔صلى الله عليه وسلم۔ من كانت له ثلاث بنات أوثلاث أخوات أو ابنتان أو اختان فأحسن صحبتهن واتقى الله فيهن فله الجنة "۔ (رواه الترمذى) [١٩١٦]

(39) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिस व्यक्ति ने दो या तीन बहनों या बेटियों की ज़िम्मेदारी निभाई उनको अच्छी शिक्षा दिलाई, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया, तथा उनकी शादी का प्रबन्ध किया तो अल्लाह की ओर से उसके लिए स्वर्ग का निर्णय है। (अबू दाऊद)

मोमिन की पहचान-

(٤٠) عن ابى هريره رضى الله عنه قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْمؤمن من امنه النّاس، علىٰ دمائهم واموالهم۔ (رواه النسائى، باب صفة المؤمن، رقم ٤٩٩٨)

(40) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, मोमिन वह है जिस से लोग अपनी जान और माल के बारे में अम्न में रहें। (नसई)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-1)
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-2)
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-3)
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-4)
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-5)
10. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-6)
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (भाग-7)
12. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स)
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
15. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)
16. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)
17. जन्नत के ह़ालात और जन्नती
18. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
20. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी
21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़मालें ह़स्ना की रौशनी में)
23. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
25. अज़ान क्या है?
26. आओ नमाज़ की ओर
27. रोज़ः का ह़ुक्म और उसके मसायल
28. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा
29. ज़कात का ह़ुक्म और उसके मसायल
30. उ़मरह का आसान तरीक़ा
31. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
35. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ *(शरीअ़त की रोशनी में)*
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन
38. सूर-ए-फ़ातिह़ा की तफ़्सीर
39. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
40. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
41. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
44. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में
45. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
46. लाइलाह इल्लल्लाहु की गवाही
47. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)
48. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में
49. सृष्टि का सृष्टा कौन?
50. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास
51. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इस्लाम का सम्बन्ध
52. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त
53. इस्लाम?

उर्दू पुस्तकें

54. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)
55. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?
56. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी
57. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात
58. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा
59. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद
60. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत
61. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम
62. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल

63. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़
64. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)
65. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर
66. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़
67. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़
68. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में
69. बौद्ध धर्म और इस्लाम
70. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े
71. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में
72. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
73. क़ियामत तक के फ़ित्नें
(रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पेशीनगोई की रोशनी में)
74. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
75. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत
76. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल
77. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
78. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत*(मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)*
79. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती
80. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
81. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र
82. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)
83. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा
84. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद
85. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त
86. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)
87. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा
88. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल
89. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा
90. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल
91. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त
92. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)
93. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़
94. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़
95. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा
96. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा
97. इस्लाम का ज़रई निज़ाम
98. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत
99. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद
100. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम
101. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम
(मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)
102. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें
103. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात
(अह़ादीस की रौशनी में)
104. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी
(क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)
105. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ
106. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर
107. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा
108. आ़माल सालिह़ा (भाग-1)
109. आ़माल सालिह़ा (भाग-2)
110. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
111. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत
112. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
113. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
114. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
115. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
116. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
117. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
118. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)
119. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
120 ज़ुल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
121. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
122. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
123. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
124. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
125. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल

126. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
127. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल
128. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
129. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
130. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
131. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल
132. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल
133. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल
134. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल
135. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
136. तर्बियत,रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल
137. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल
138. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
139. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल
140. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल
141. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल
142. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
143. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल
(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
144. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त
145. नबियों व सह़ाबा का ज़रिया-ए-मआ़श
146. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
147. सह़ाबियात के अहम वाक़िआ़त
148. रसूल करीम (सल्ल०) की अज़वाज मुतह़हरात
149. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब

अ़रबी पुस्तकें

150. ग़ैर अ़रबी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन की इशाअ़त
151. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्ह़ज़ारात अल्मुख़्तलह
152. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह
153. नुब्ज़तु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
154. ग़ज़्व-ए-ह़ुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह
155. अस्बाब तह़बतुल् अअ़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
156. अल् फ़ितन अल् वाक़िअ़ः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़
157. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा
158. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा
159. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
160. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद
161. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा
162. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात

अंग्रेज़ी पुस्तकें

163. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण
164. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप
165. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम
166. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम
167. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी
168. इस्लाम?

अनुवाद की हुई पुस्तकें

169. मुन्तख़ब अह़ादीस
(लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)
170. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक-इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह़०)
171. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर
(लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह०)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुह़ताज़ है
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
173. रमज़ान का तोह़फ़ा
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
172. मानवता आज भी उसी चौखट की मुह़ताज़ है
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
173. रमज़ान का तोह़फ
174. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
175. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन?
(विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी)
(तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)
176. यतीमों की किफ़ालत
(लेखक-मुह़म्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)